Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 118-120

पंडवाणी: छत्तीसगढ़ की लोकगाथा

[1]जया शर्मा, [2]डॉ.ममता रानी
[2]सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय,नवा रायपूर, छत्तीसगढ़ – 492101

पंडवाणी छत्तीसगढ़ की सर्वाधिक प्रतिष्ठित लोकनाट्य–गायन परंपरा है, जो भारतीय महाकाव्य महाभारत की कथाओं को लोकधुन, भावाभिनय और तात्कालिक संवाद के माध्यम से प्रस्तुत करती है। यह केवल एक मनोरंजन विधा नहीं, बल्कि लोकस्मृति, नैतिक शिक्षाओं, सामाजिक मूल्यों और सामुदायिक पहचान का जीवंत माध्यम है। पंडवाणी ने सदियों से ग्रामीण समाज को धर्म, नीति, वीरता और मानवीय संवेदनाओं से जोड़े रखा है।[1]

पंडवाणी की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पंडवाणी की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों का मत है कि यह परंपरा मध्य भारत में भक्ति आंदोलन के प्रभाव तथा मौखिक कथादृपरंपरा के विकास से जुड़ी हुई है। 'पंडवाणी' शब्द की व्युत्पत्ति 'पांडव' और 'वाणी' से मानी जाती है, अर्थात पांडवों की कथा का गायन।[2] छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचलोंकृविशेषकर रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर और राजनांदगांव क्षेत्रों,में यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी गुरुदृशिष्य परंपरा से आगे बढ़ी।

कथ्य एवं विषयवस्तु

पंडवाणी का कथ्य मुख्यतः महाभारत पर आधारित होता है, जिसमें पांडवों का वनवास, द्रौपदी चीरहरण, भीमदृहनुमान संवाद, अर्जुन का तप, कुरुक्षेत्र युद्ध आदि प्रसंग प्रमुख हैं। लोकगायक (पंडवानीया) कथा को समसामयिक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करता है, जिससे यह परंपरा स्थिर न होकर गतिशील बनी रहती है।[3]इस लचीलापन के कारण पंडवाणी ग्रामीण समाज में आज भी प्रासंगिक है।

प्रस्तुति शैली और प्रकार

पंडवाणी की प्रस्तुति दो प्रमुख शैलियों में होती है–

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 118-120

वेदमति शैली: इसमें कथावाचन अपेक्षाकृत शांत, गंभीर और शास्त्रीय भाव लिए होता है। कथावाचक ग्रंथानुसार कथा को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है।

कपाटी शैली: यह अधिक नाटकीय, ऊर्जावान और अभिनयप्रधान होती है। इसमें कलाकार पात्रों के संवाद, हावदृभाव और शारीरिक गतियों के माध्यम से कथा को सजीव बनाते हैं।[4]

वाद्ययंत्र एवं मंच संरचना

पंडवाणी में प्रमुख रूप से तंबूरा, ढोलक, मंजीरा और कभीदृकभी नाल का प्रयोग होता है। तंबूरा न केवल वाद्य है, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से शस्त्र या धनुष के रूप में भी प्रयुक्त होता है। मंच सज्जा अत्यंत सादगीपूर्ण होती है, जिससे कथा और कलाकार का भाव केंद्र में रहता है।[5]

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

पंडवाणी छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति की आत्मा मानी जाती है। यह जाति, वर्ग और लिंग की सीमाओं से परे सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहित करती है। ग्रामीण मेलों, पर्वों और सामाजिक आयोजनों में पंडवाणी का आयोजन सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को मजबूत करता है।[6]

पंडवाणी और स्त्री सहभागिता

परंपरागत रूप से पंडवाणी पुरुष प्रधान मानी जाती थी, किंतु आधुनिक काल में स्त्री कलाकारों ने इसे नई पहचान दी। तीजन बाई जैसी महान कलाकार ने पंडवाणी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाया। उनके सशक्त अभिनय और गायन ने न केवल इस कला को वैश्विक पहचान दिलाई, बल्कि लोकनाट्य में स्त्री सशक्तिकरण का नया अध्याय भी जोड़ा।[7]

आधुनिक संदर्भ और परिवर्तन

आधुनिक समय में पंडवाणी ने मंचीय प्रस्तुतियों, दूरदर्शन, रेडियो और डिजिटल माध्यमों के जरिए नया विस्तार पाया है। यद्यपि व्यावसायीकरण और संक्षिप्तीकरण से इसकी मौलिकता पर कुछ खतरे भी उत्पन्न हुए हैं, फिर भी यह परंपरा अपनी मूल लोकचेतना को बनाए रखने का प्रयास कर रही है।[8]

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 118-120

पंडवाणी केवल महाभारत की कथा नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ी समाज की सामूहिक स्मृति, नैतिक दृष्टि और सांस्कृतिक पहचान का सजीव दस्तावेज है। इसकी मौखिक परंपरा, भावप्रधान प्रस्तुति और सामाजिक सरोकार इसे भारतीय लोकनाट्य की विशिष्ट धरोहर बनाते हैं। संरक्षण, शोध और शिक्षण के माध्यम से पंडवाणी को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाना आज की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामकुमार — *छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति*, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. दुबे, रामनाथ — *छत्तीसगढ़ का पंडवाणी लोकनाट्य*, लोकसंस्कृति अध्ययन संस्थान, रायपुर।
3. शुक्ल, लक्ष्मीकांत — *पंडवानी : परंपरा और प्रयोग*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
4. मिश्रा, शिवकुमार — *भारतीय लोकनाट्य परंपराएँ*, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. वर्मा, गोविंद — *छत्तीसगढ़ी लोकसंगीत*, संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़।
6. सिंह, के.एस. — *People of India: Chhattisgarh*, Anthropological Survey of India.
7. तीजन बाई — साक्षात्कार संकलन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
8. त्रिपाठी, अनिल — *लोककला और आधुनिकता*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।